प्रारंभिक परीक्षा

आर्द्रभूमि शहर मान्यता(Wetland City Accreditation)

संदर्भ

इंदौर और उदयपुर आर्द्रभूमि मान्यता प्राप्त शहरों की वैश्विक सूची में शामिल होने वाले पहले दो भारतीय शहर बन गए हैं।

आर्द्रभूमि शहर मान्यता के बारे में -

- **यह एक स्वैच्छिक मान्यता प्रणाली है जो शहरों को उनके आर्द्रभूमि संरक्षण प्रयासों के लिए अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करने की अनुमति देती है।**
- **इसे 2015 में रामसर कन्वेंशन के** COP**12 (उरुग्वे) में लॉन्च किया गया था।**
- यह उन शहरों को मान्यता देता है जिन्होंने अपने शहरी आर्द्रभूमि की सुरक्षा के लिए असाधारण कदम उठाए हैं।
- **वैधता**: एक बार स्वीकृत होने के बाद यह **6 वर्ष की अवधि के लिए वैध** रहता है।
- **मान्यता के लिए मानदंड -** शहरों को **छह अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों** को पूरा करना होगा, जिनमें शामिल हैं:
    - आर्द्रभूमि संरक्षण एवं विवेकपूर्ण उपयोग के लिए उपाय अपनाना।
    - आर्द्रभूमि द्वारा प्रदान की जाने वाली पारिस्थितिकी सेवाओं को बढ़ावा देना।
    - आर्द्रभूमि से जुड़ी टिकाऊ सामाजिक-आर्थिक प्रथाओं को बनाए रखना।
    - संरक्षण में स्थानीय समुदायों को शामिल करना।
    - आर्द्रभूमि क्षरण से संबंधित चिंताओं का समाधान करना।
    - प्राकृतिक एवं मानव निर्मित दोनों प्रकार की आर्द्रभूमियों का संरक्षण करना।

भारत से नवीनतम शहर जो जोड़े गए:

- **इंदौर, मध्य प्रदेश: सिरपुर झील** के लिए जाना जाने वाला, एक रामसर स्थल जिसे पक्षी अभयारण्य और जलीय पक्षी समागम क्षेत्र के रूप में विकसित किया गया है।
- **उदयपुर, राजस्थान:** यह यह अपने परस्पर जुड़े हुए आद्ररभूमियों के लिए जाना जाता है, जिनमें **पिछोला, फतेह सागर, रंग सागर, स्वरूप सागर और द्वध तलाई शामिल हैं**, जो जैव विविधता और पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा देते हैं।

रामसर कन्वेंशन

- **यह यूनेस्को के अंतर्गत एक अंतर-सरकारी संधि है।**
- **यह आर्द्रभूमियों और उनके संसाधनों के संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग के लिए रूपरेखा प्रदान करता है।**
- इस समझौते पर **2 फरवरी 1971 को रामसर (ईरान) में हस्ताक्षर** किये गये।
- **रामसर कन्वेंशन के साझेदार:** बर्डलाइफ इंटरनेशनल, आईयूसीएन, वेटलैंड्स इंटरनेशनल, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ, इंटरनेशनल वाटर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, वाइल्डफाउल एंड वेटलैंड्स ट्रस्ट।
- **भारत 1982 में रामसर कन्वेंशन में शामिल हुआ।**

स्रोत: [Times of India - Wetland accredited cities]

प्री-लिस्टिंग ट्रेडिंग के लिए सेबी का प्रस्तावित "व्हेन-लिस्टेड" प्लेटफॉर्म

संदर्भ

सेबी **प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश(IPO)** बोली बंद होने के बाद शेयरों के आवंटन और स्टॉक एक्सचेंजों पर आधिकारिक लिस्टिंग के बीच की अवधि में शेयरों के व्यापार को विनियमित करने के लिए एक "**व्हेन-लिस्टेड**" **प्लेटफ़ॉर्म** शुरू करने की योजना बना रहा है।

"व्हेन-लिस्टेड प्लेटफॉर्म(When-Listed Platform)" के बारे में -

- यह नए आवंटित लेकिन अभी सूचीबद्ध होने वाले शेयरों को विनियमित तरीके से व्यापार करने की अनुमति देगा।
- **इसका उद्देश्य ग्रे मार्केट गतिविधि पर अंकुश लगाना है, जो सूचीबद्ध होने से पहले शेयरों का अनौपचारिक और अनियमित व्यापार है।**
- सेबी चेयरपर्सन के अनुसार, यह कदम "कर्ब ट्रेडिंग" (ग्रे मार्केट ट्रेडिंग) का एक औपचारिक विकल्प प्रदान करेगा और प्रक्रिया में पारदर्शिता लाएगा।

ग्रे मार्केट(Grey Market) और उसका प्रभाव

- **ग्रे मार्केट एक अनौपचारिक नकद बाजार को संदर्भित करता है, जहां आगामी IPO के शेयरों का आधिकारिक लिस्टिंग से पहले कारोबार किया जाता है।**
- ग्रे मार्केट में ट्रेडिंग मांग और आपूर्ति के सिद्धांतों पर आधारित होती है।

ग्रे मार्केट ट्रेडिंग कैसे काम करती है:

- जब कोई कंपनी IPO की घोषणा करती है, तो ग्रे मार्केट ब्रोकर काम करना शुरू कर देते हैं।
- IPO का मूल्य दायरा तय है (उदाहरण के लिए, ₹90-100 प्रति शेयर)।
- मांग की अपेक्षाओं के आधार पर एक प्रीमियम (उदाहरण के लिए, ₹10, ₹20, ₹30) जोड़ा जाता है।
- निवेशक आवंटन से पहले ग्रे मार्केट में शेयरों के लिए बोली लगाते हैं।
- लिस्टिंग के दिन, यदि स्टॉक ग्रे मार्केट मूल्य से अधिक पर खुलता है, तो ग्रे मार्केट संचालक निवेशकों को लाभ का भुगतान करते हैं।
- यदि स्टॉक खरीद मूल्य से नीचे गिर जाता है, तो निवेशक को नुकसान होता है।

ग्रे मार्केट ट्रेडिंग से संबंधित समस्याएं:

- **अनियमित एवं जोखिमपूर्ण:** कोई कानूनी निगरानी नहीं, जिससे धोखाधड़ी और अनुचित व्यवहार की संभावना बढ़ जाती है।
- **सट्टा एवं अस्थिर:** भ्रामक मूल्य अपेक्षाएं पैदा कर सकता है।
- **खुदरा निवेशक जोखिम:** कई छोटे निवेशक IPO निवेश पर निर्णय लेने के लिए ग्रे मार्केट प्रीमियम पर भरोसा करते हैं।

वर्तमान IPO टाइमलाइन और सेबी की चिंताएं

- **मौजूदा T+3 IPO लिस्टिंग प्रणाली निम्नानुसार काम करती है:**
  - **T(IPO समापन दिवस):** IPO सदस्यता बंद हो जाती है।
  - **T+1:** शेयरों का आवंटन होता है।
  - **T+3:** स्टॉक एक्सचेंजों पर आधिकारिक रूप से सूचीबद्ध शेयर।
- **समस्या:**
  - T+1 और T+3 के बीच के अंतराल के दौरान ग्रे मार्केट में ट्रेडिंग तेजी से होती है।

- सेबी का मानना है कि निवेशकों को कर्ब ट्रेडिंग में शामिल होने के बजाय विनियमित क्षेत्र में व्यापार करना चाहिए।

- **"व्हेन-लिस्टेड" प्लेटफॉर्म कैसे काम करेगा?**
  - एक बार जब IPO शेयर आवंटित हो जाते हैं (T+1), तो निवेशक उन्हें "व्हेन-लिस्टेड" प्लेटफॉर्म पर आधिकारिक रूप से व्यापार करना शुरू कर सकते हैं।
  - यह प्री-लिस्टिंग ट्रेडों के लिए विनियमित वातावरण प्रदान करके ग्रे मार्केट पर निर्भरता को समाप्त कर देगा।

स्रोत: **Indian Express - When listed platform**

ग्रीनलैंड की क्रिस्टल नीली झीलें भूरी क्यों हो गई हैं?

संदर्भ

प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन के अनुसार **पश्चिमी ग्रीनलैंड में 7,500 से अधिक झीलें भूरी हो गई हैं।**

इस परिवर्तन का कारण क्या है? - 2022 में असामान्य मौसम पैटर्न:

- ग्रीनलैंड में आमतौर पर अगस्त के अंत से सितंबर तक बर्फबारी होती है।
- लेकिन, 2022 में, गर्म तापमान के कारण बर्फबारी के बजाय बारिश हुई, जिससे पर्यावरण में भारी बदलाव आया।
- भारी वर्षा से कार्बन, आयरन, मैग्नीशियम और अन्य तत्व झीलों में बह गए, जिससे उनकी भौतिक और रासायनिक संरचना बदल गई।
- बढ़ी हुई गर्मी ने पर्माफ्रॉस्ट को भी पिघला दिया, जो कार्बनिक कार्बन और विभिन्न खनिजों को संग्रहीत करता है।

इस पर्यावरणीय बदलाव के परिणाम

- **जल गुणवत्ता में गिरावट**: झीलों में कार्बनिक पदार्थों की वृद्धि से उनके स्वाद, गंध और रंग पर असर पड़ा।
- **सूर्य के प्रकाश का कम प्रवेश:**
    - झीलों के अंधेरे होने से सूर्य की रोशनी अवरुद्ध हो गई, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र बाधित हो गया।
    - फाइटोप्लांकटन, जो कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।
    - इससे CO_2 अवशोषण क्षमता कम हो गई, जिससे झीलें कार्बन सिंक के रूप में कम प्रभावी हो गईं।
- **कार्बन सिंक से कार्बन स्रोत की ओर बदलाव:**
    - झीलें, जो पहले कार्बन को अवशोषित करती थीं, इसके बजाय उत्सर्जन करना शुरू कर दिया।
    - कार्बनिक पदार्थों के टूटने के कारण झीलों से कार्बन उत्सर्जन 350% बढ़ गया।

वायुमंडलीय नदियों की भूमिका:

- **वायुमंडलीय नदियाँ वायुमंडल में नमी की लंबी, संकीर्ण पट्टियाँ हैं जो उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से बड़ी मात्रा में जल वाष्प का परिवहन करती हैं।**
- उन्हें कभी-कभी "आकाश में नदियाँ" कहा जाता है और वे महत्वपूर्ण वर्षा की घटनाओं के लिए जिम्मेदार हैं।
- **वायुमंडलीय नदियों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:**
    - 2018 नासा के एक अध्ययन में भविष्यवाणी की गई है कि बढ़ते वैश्विक तापमान के कारण वायुमंडलीय नदियाँ अधिक तीव्र, लंबी और चौड़ी हो जाएंगी।
    - 21वीं सदी के अंत तक, ग्रीनलैंड, पश्चिमी उत्तरी अमेरिका, पूर्वी एशिया, पश्चिमी यूरोप और अंटार्कटिका जैसे क्षेत्रों में वायुमंडलीय नदियाँ 50-290% अधिक हो सकती हैं**(Phys.com report)**।

स्रोत: **Indian Express - Greenland's crystal blue lakes**

विमुक्त जनजातियों के वर्गीकरण का प्रभाव

संदर्भ

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) और जनजातीय अनुसंधान संस्थान (TRI) ने पहली बार 268 विमुक्त, अर्ध-घुमंतू और खानाबदोश जनजातियों को वर्गीकृत किया है।

विमुक्त जनजातियों (DNT) के बारे में -

- **DNT भारत में ऐसे समुदाय हैं जिन्हें पहले ब्रिटिश राज के दौरान आपराधिक जनजातियों की सूची में रखा गया था।**
- **केंद्र सरकार ने 1952 में आपराधिक जनजाति अधिनियम को निरस्त कर दिया, जिससे इन समुदायों से "अपराधी" शब्द का पदनाम हटा दिया गया।**
- **DNT से संबंधित प्रमुख पिछले आयोग**
    - प्रथम पिछड़ा वर्ग आयोग (1953) - काका कालेलकर
    - लोकुर समिति (1965)
    - मंडल आयोग (1980)
    - रेनके आयोग (2008)
    - इडेट आयोग (2017)
- 2019 में पीएमओ द्वारा एक विशेष समिति का गठन किया गया था। इसे DNT के नृवंशविज्ञान वर्गीकरण का कार्य दिया गया था। इसका नेतृत्व AnSI और जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (TRI) द्वारा किया गया था।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

- **कुल अध्ययन किए गए समुदाय**: 268 विमुक्त, अर्ध-घुमंतू और खानाबदोश जनजातियों को पहली बार व्यापक रूप से वर्गीकृत किया गया था।
- **एससी/एसटी/ओबीसी सूची में शामिल करना**: 179 समुदायों को अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) सूची में शामिल करने की सिफारिश की गई।
- **पहली बार वर्गीकरण**: 85 समुदायों को पहली बार वर्गीकरण के लिए अनुशंसित किया गया।
- **गुम समुदाय:** 63 समुदाय संभावित सम्मिलन, नाम परिवर्तन या प्रवासन के कारण "पता लगाने योग्य नहीं" पाए गए।

वर्गीकरण की आवश्यकता

- सामाजिक न्याय और अधिकारिता पर संसदीय स्थायी समिति ने बेहतर कल्याण पहुंच के लिए इन समुदायों को वर्गीकृत करने की तात्कालिकता पर जोर दिया।
- पिछली जनगणनाओं में गलत वर्गीकरण के कारण जनजातियों और जातियों के संबंध में भ्रम पैदा हुआ है।
- कुछ समुदाय अवर्गीकृत रहते हैं, जिससे उनके लिए कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाना मुश्किल हो जाता है।

स्रोत: **The Hindu - Denotified tribes**

केंद्रीय बजट के प्रमुख घटक

संदर्भ

बजट में तीन प्रमुख घटक होते हैं: व्यय, प्राप्तियां और घाटा संकेतक।

व्यय - व्यय के प्रकार:

- **पूंजीगत व्यय:** टिकाऊ परिसंपत्तियां बनाने या देनदारियों को कम करने के लिए उपयोग किया जाता है।
    - उदाहरण: **स्कूल, अस्पताल, बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का निर्माण।**
- **राजस्व व्यय:** इससे परिसंपत्तियों में वृद्धि नहीं होती है और देयताओं में कमी नहीं आती है।
    - उदाहरण: **मजदूरी, वेतन, सब्सिडी, ब्याज भुगतान का भुगतान।**
- **विकास व्यय: आर्थिक और सामाजिक सेवाओं पर व्यय** का योग।

प्राप्तियां - प्राप्तियों के प्रकार:

- **राजस्व प्राप्तियां:** देनदारियों में वृद्धि नहीं करती है।
    - **कर राजस्व (जीएसटी, आयकर, कॉर्पोरेट कर, उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क, आदि) और गैर-कर राजस्व (लाभांश, शुल्क, जुर्माना, अनुदान)** शामिल हैं।
- **गैर-ऋण पूंजी प्राप्तियां:** देनदारियों या भविष्य के दायित्वों का निर्माण नहीं करती है।
    - उदाहरण: **ऋण वसूली, विनिवेश आय।**
- **ऋण सृजनकारी पूंजी प्राप्तियां: इसमें उच्च देनदारियां और भविष्य में पुनर्भुगतान की प्रतिबद्धताएं** शामिल होती हैं।

घाटे के विभिन्न प्रकार:

- **राजकोषीय घाटा:** यह राजस्व प्राप्तियों तथा गैर-ऋण पूंजी प्राप्तियों (एनडीसीआर) और कुल व्यय के बीच का अंतर है।
    - यह सरकार की कुल उधार आवश्यकता को दर्शाता है।
    - यह सरकारी व्यय को पूरा करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त वित्तीय संसाधनों की संख्या को भी इंगित करता है
- **राजस्व घाटा:** इसका तात्पर्य राजस्व प्राप्तियों की तुलना में राजस्व व्यय की अधिकता से है।
    - राजस्व घाटा = कुल राजस्व व्यय – कुल राजस्व
- **प्रभावी राजस्व घाटा:** यह राजस्व घाटे और पूंजीगत परिसंपत्तियों के सृजन के लिए अनुदान के बीच का अंतर है।
- **प्राथमिक घाटा:** इसे राजकोषीय घाटे में से ब्याज भुगतान घटाकर मापा जाता है।
    - यह ब्याज भुगतान को छोड़कर व्यय को पूरा करने के लिए सरकार की उधार आवश्यकताओं को दर्शाता है।

यूपीएससी पीवाईक्यू

प्रश्न: पिछले कई वर्षों से लगातार घाटे का बजट रहा है। घाटे को कम करने के लिए सरकार निम्नलिखित में से कौन-सी कार्रवाई कर सकती है? (2015)

1. राजस्व व्यय में कमी
2. नई कल्याणकारी योजनाएं शुरू करना
3. सब्सिडी को तर्कसंगत बनाना
4. उद्योगों का विस्तार

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।

(a) केवल 1 और 3
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1
(d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

स्रोत: **The Hindu - Union Budget**

डीपसीक एआई(DeepSeek AI)

संदर्भ

चीनी स्टार्टअप डीपसीक ने एआई मॉडल लॉन्च किए हैं जो बहुत कम कीमत पर शीर्ष अमेरिकी मॉडलों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं।

डीपसीक एआई के बारे में -

- डीपसीक एआई एक **चीनी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस स्टार्टअप** है, जिसने चैटजीपीटी के प्रतियोगी के रूप में तेजी से प्रसिद्धि प्राप्त की है।
- **इसकी स्थापना मई 2023 में लियांग वेनफ़ेंग द्वारा की गई थी और 2025 की शुरुआत में अपने डीपसीक-आर1 मॉडल के रिलीज़ के साथ यह व्यापक रूप से लोकप्रिय हो गया।**
- **दो शक्तिशाली एआई मॉडल:**
    - **डीपसीक-V3:** प्रश्नों के उत्तर देने, सामग्री तैयार करने और कोडिंग जैसे सामान्य प्रयोजन के कार्यों पर ध्यान केंद्रित करता है।
    - **डीपसीक-R1:** जटिल तर्क, तार्किक समस्या समाधान और गणितीय गणना में उत्कृष्टता।

डीपसीक एआई की विशेषताएं

- **विशेषज्ञों का मिश्रण(MoE) आर्किटेक्चर:** पारंपरिक AI मॉडल के विपरीत, MoE यह सुनिश्चित करता है कि मॉडल के मापदंडों का केवल एक छोटा हिस्सा किसी भी समय सक्रिय हो।
    - इससे उच्च दक्षता बनाए रखते हुए कंप्यूटिंग शक्ति की आवश्यकता कम हो जाती है।
    - यह समय के साथ तेजी से सीखने और बेहतर प्रदर्शन को भी सक्षम बनाता है।
- **बिना किसी सीमा के उपयोग हेतु निःशुल्क:**
    - चैटजीपीटी की प्रीमियम सुविधाओं के विपरीत, डीपसीक एआई नियमित उपयोगकर्ताओं के लिए पूरी तरह से मुफ़्त है।
    - दैनिक उपयोग पर कोई प्रतिबंध नहीं, जिससे यह सभी के लिए सुलभ हो सके।
- **लागत प्रभावी API मूल्य निर्धारण:**
    - डीपसीक एआई, ओपनएआई के चैटजीपीटी की तुलना में काफी सस्ते API प्रदान करता है, जिससे यह डेवलपर्स के लिए एक आकर्षक विकल्प बन जाता है।
- **वास्तविक समय वेब सर्च क्षमता:** उपयोगकर्ता वास्तविक समय, अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए डीपसीक एआई से सीधे वेब सर्च सकते हैं।

स्रोत: [Indian Express - Deepseek]

समाचार संक्षेप में

सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिन 2.0 प्रणाली

- **हाल ही में, विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) ने उन्नत सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिन (eCoO) 2.0 प्रणाली शुरू की है।**
- यह सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिन (CoO) जारी करने के लिए एक उन्नत डिजिटल प्लेटफॉर्म है।
- **सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिन (CO) एक दस्तावेज है जो निर्यात किये जाने वाले उत्पाद के मूल देश की पुष्टि करता है।**

प्रमुख विशेषताऐं

- **बहु-उपयोगकर्ता पहुंच:** निर्यातक एकल आयातक निर्यातक कोड (IEC) के तहत एकाधिक उपयोगकर्ताओं को अधिकृत कर सकते हैं, जिससे संगठन के भीतर पहुंच में सुधार होता है।
- **आधार-आधारित ई-हस्ताक्षर:** यह प्रणाली डिजिटल हस्ताक्षर टोकन के साथ-साथ आधार-आधारित ई-हस्ताक्षर का समर्थन करती है, जिससे निर्यातकों को अधिक लचीलापन मिलता है।
- **एकीकृत डैशबोर्ड:** डैशबोर्ड निम्नलिखित तक निर्बाध पहुंच प्रदान करता है: **eCoO सेवाएं, मुक्त व्यापार समझौता (FTA) सूचना और व्यापार कार्यक्रम और संसाधन।**
- **सुधार सुविधा:** एक नई सुविधा निर्यातकों को आसान ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया के माध्यम से पहले जारी किए गए मूल प्रमाण पत्रों में सुधार का अनुरोध करने की अनुमति देती है।

स्रोत: Indian Express - Enhanced eCoO 2.0 System

फेंटेनाइल(Fentanyl)

- हाल ही में, अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि उनका प्रशासन चीनी आयात पर 10% दंडात्मक शुल्क लगाने पर विचार कर रहा है, क्योंकि फेंटेनाइल को चीन से मैक्सिको और कनाडा के माध्यम से अमेरिका भेजा जा रहा है।

फेंटेनाइल के बारे में -

- **फेंटेनाइल एक शक्तिशाली सिंथेटिक ओपिओइड है जिसका उपयोग एनाल्जेसिक (दर्द निवारक) और एनेस्थेटिक के रूप में किया जाता है।**
- **यह मॉर्फिन से 100 गुना अधिक शक्तिशाली है और हेरोइन से 50 गुना अधिक प्रभावशाली है।**
- **स्वास्थ्य जोखिम:**
  - ओवरडोज के कारण निम्नलिखित हो सकते हैं: पुतलियों के आकार में परिवर्तन, सायनोसिस (ऑक्सीजन की कमी के कारण त्वचा का नीला पड़ना), श्वसन विफलता जिसके कारण मृत्यु हो सकती है, आदि।
- **अन्य ओपिओइड:** ऑक्सीकोडोन, मॉर्फिन, कोडीन, हेरोइन आदि। ये उत्साह और दर्द से राहत देते हैं, लेकिन अत्यधिक नशे की लत पैदा करते हैं।
- **अत्यधिक नशे की लत प्रकृति:**
  - ओपिओइड दवाएं तत्काल राहत प्रदान करती हैं, लेकिन इनका प्रभाव जल्दी ही खत्म हो जाता है, जिससे इनका बार-बार उपयोग और लत लग जाती है।
  - कई लोग डॉक्टर के पर्चे पर मिलने वाली ओपिऑइड दवाओं से शुरुआत करते हैं और बाद में फेंटेनाइल जैसी शक्तिशाली अवैध दवाओं की ओर चले जाते हैं।

स्रोत: Indian Express - fentanyl crisis in the US

लाश का फूल - एमोर्फोफैलस टाइटेनम

- **सिडनी, ऑस्ट्रेलिया और न्यूयॉर्क, अमेरिका में एक साथ दो दुर्लभ लाश के फूल खिले।**

लाश का फूल(Corpse Flower) के बारे में -

- यह **एक दुर्लभ प्रजाति** है, जो **एक दशक में एक बार खिलती है और केवल एक दिन तक रहती है।**
- **इसे 'लाश फूल' इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सड़े हुए मांस की तरह गंध देता है, जो परागणकों को आकर्षित करता है।**
- यह विश्व के सबसे बड़े वृक्षों में से एक है, जिसकी ऊंचाई 10 फीट से अधिक होती है।
- **इसका मूल स्थान पश्चिमी सुमात्रा, इण्डोनेशिया है।**
- **आईयूसीएन स्थिति:** लुप्तप्राय

स्रोत: **The Hindu - what is corpse flower**

WHO ने कम सोडियम वाले नमक के विकल्पों पर दिशा-निर्देश जारी किए

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने सोडियम सेवन को कम करने और हृदय संबंधी बीमारियों को रोकने के लिए कम सोडियम वाले नमक के विकल्प के उपयोग की सिफारिश करते हुए दिशानिर्देशों का एक नया सेट जारी किया है।

कम सोडियम वाले नमक के विकल्प क्या हैं?

- **कम-सोडियम नमक के विकल्प नियमित टेबल नमक (सोडियम क्लोराइड - NaCl) के विकल्प हैं जहां सोडियम के हिस्से को पोटेशियम क्लोराइड (KCl) या अन्य खनिजों से बदल दिया जाता है।**
- ये विकल्प सोडियम सेवन को कम करने में मदद करते हैं, जो उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और स्ट्रोक से जुड़ा हुआ है।
- इन्हें मुख्य रूप से घरेलू उपयोग के लिए अनुशंसित किया जाता है, न कि प्रसंस्कृत या रेस्तरां खाद्य पदार्थों के लिए।
- **सामान्य प्रकार के नमक विकल्प:** पोटेशियम क्लोराइड (**KCl**), मैग्नीशियम सल्फेट (**$MgSO_4$**) और कैल्शियम क्लोराइड (**$CaCl_2$**)
- **इनकी अनुशंसा नहीं की जाती है**: गुर्दे की बीमारी वाले लोग (अतिरिक्त पोटेशियम हानिकारक हो सकता है), गर्भवती महिलाएं और बच्चे (सुरक्षा पर पर्याप्त शोध नहीं)।
- **कम सोडियम वाले नमक के विकल्प के स्वास्थ्य लाभ:**
    - सोडियम का सेवन कम करके उच्च रक्तचाप (हाइपरटेंशन) को कम करता है।
    - हृदय रोग और स्ट्रोक का खतरा कम होता है।
    - पोटेशियम के सेवन से इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है।

स्रोत: **The Hindu - lower-sodium salt substitutes**

संपादकीय सारांश

बाल विवाह कानूनों में मौलिक समानता

संदर्भ

संजय चौधरी बनाम गुड्डन (2024) मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने **बाल विवाह निषेध अधिनियम (PCMA), 2006 की धारा 3 के** तहत एक बाल विवाह को रद्द कर दिया, जहां विवाह के समय पुरुष की आयु 12 वर्ष और महिला की आयु 9 वर्ष थी।

बाल विवाह से संबंधित प्रावधान

- **बाल विवाह निषेध अधिनियम (PCMA), 2006**
    - **एक बच्चे को 18 वर्ष से कम उम्र की लड़की और 21 वर्ष से कम उम्र के लड़के के रूप में परिभाषित करता है।**
    - **धारा 3:** बाल विवाह को रद्द करने की अनुमति देती है यदि बालिग होने के दो साल के भीतर आवेदन दायर किया जाता है (लड़कियों के लिए 18, लड़कों के लिए 21)।
    - नाबालिग से शादी को अपराध घोषित किया गया है, कम उम्र की लड़कियों से शादी करने वाले वयस्क पुरुषों के लिए दंड का प्रावधान है।
- **भारतीय वयस्कता अधिनियम(Indian Majority Act), 1875:** पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए 18 वर्ष की आयु को वयस्क घोषित किया गया।
- **इंडिपेंडेंट थॉट बनाम भारत संघ (2017)**
    - 18 वर्ष से कम आयु की पत्नियों के लिए वैवाहिक बलात्कार के अपवाद को समाप्त कर दिया गया।
    - यह पाया गया कि **पुरुष 23 वर्ष तक बाल विवाह को रद्द कर सकते हैं**, लेकिन PCMA की विस्तृत जांच के बिना।

प्रासंगिक मामले और फैसले

- **टी. शिवकुमार बनाम पुलिस निरीक्षक (2011) – मद्रास उच्च न्यायालय**
    - यह माना गया कि यदि पुरुषों के लिए केवल 20 वर्ष की आयु तक विवाह विच्छेद की अनुमति है, तो यह उन पुरुषों के लिए एक अनुचित नुकसान पैदा करता है जिनकी शादी 20 वर्ष की आयु में हुई है, लेकिन वे अपनी शादी को रद्द करने में असमर्थ हैं।
    - पुरुषों के लिए आयु सीमा बढ़ाकर 23 वर्ष की गई।
- **संजय चौधरी बनाम गुड्डन (2024) - इलाहाबाद उच्च न्यायालय**
    - न्यायालय ने कहा कि **18 वर्ष के बाद विवाह करने वाले पुरुष यह दावा नहीं कर सकते कि उन्हें कानून की जानकारी नहीं है**।
    - आयु में भेदभाव पितृसत्तात्मक धारणाओं से उपजा है, तथा दोनों लिंगों के लिए विवाह-विच्छेद की आयु सीमा समान होनी चाहिए।
    - हालाँकि, चूंकि सुप्रीम कोर्ट ने **इंडिपेंडेंट थॉट (2017) में** 23 वर्ष की अवधि का सुझाव दिया था, इसलिए उच्च न्यायालय ने विवाह-विच्छेद के अधिकारों में लैंगिक समानता का आह्वान करते हुए उसी मिसाल का पालन किया।

क्या किया जाने की जरूरत है?

- **सभी के लिए विवाह की एक समान आयु 18 वर्ष:** वर्तमान आयु विभेद (महिलाओं के लिए 18 वर्ष, पुरुषों के लिए 21 वर्ष) पुरानी लैंगिक भूमिकाओं पर आधारित है।

    - महिलाओं के लिए विवाह की आयु बढ़ाकर 21 वर्ष करना (जैसा कि 2021 के संशोधन विधेयक में प्रस्तावित है) महिलाओं को सशक्त बनाने के बजाय स्वायत्तता पर अंकुश लगा सकता है।
- **दोनों जेंडर के लिए समान विवाह रद्द करने की अवधि:** वर्तमान में पुरुषों के पास विवाह रद्द करने के लिए 23 वर्ष तक का समय है, जबकि महिलाओं के पास 20 वर्ष तक का समय है, जिससे लैंगिक असमानता पैदा होती है।
    - कानून दोनों के लिए एक समान होना चाहिए।
- **अपराधीकरण के स्थान पर सामाजिक सुधारों को मजबूत करना:** अध्ययनों से पता चलता है कि 49.4% बाल विवाह स्वयं द्वारा शुरू किए जाते हैं, जिनका मुख्य रूप से परिवारों द्वारा विरोध किया जाता है।
    - उम्र बढ़ाने से राज्य और अभिभावकों का नियंत्रण बढ़ जाएगा, जिससे युवा दम्पतियों के अपराधीकरण और संस्थागतकरण का खतरा बढ़ जाएगा।
    - **बेहतर विकल्प:** निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच, सामाजिक सुरक्षा और यौन शिक्षा।
- **विवाह निरस्तीकरण याचिकाओं के लिए समय सीमा में वृद्धि:** सामाजिक-आर्थिक और मनोवैज्ञानिक बाधाओं को देखते हुए विवाह निरस्तीकरण याचिकाओं के लिए समय सीमा को वर्तमान दो वर्ष की सीमा से आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला इस बात के लिए एक मिसाल कायम करेगा कि क्या पुरुष 23 साल की उम्र तक विवाह रद्द करने की मांग कर सकते हैं या केवल 20 साल तक। व्यापक रूप से, यह लैंगिक कानूनी मान्यताओं की फिर से जांच करने और पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान विवाह कानूनों और विवाह रद्द करने के अधिकारों की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता है।

स्रोत: **The Hindu: substantive Equality in Child Marriage Laws**

समतामूलक विकास के लिए भारतीय उद्योग जगत को कदम बढ़ाने की जरूरत

संदर्भ

पिछले दशक में भारत के आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जिनमें मजबूत वृद्धि और निरन्तर असमानताएं शामिल हैं।

आर्थिक विकास और सुधार

- **उच्च विकास का युग:** भारत एक कमजोर अर्थव्यवस्था से विकास के एक प्रकाश स्तंभ में परिवर्तित हो गया है, जो कि मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति और रणनीतिक सुधारों से प्रेरित है।
    - आईएमएफ और विश्व बैंक जैसी वैश्विक संस्थाओं ने सुधारों और पूंजी निवेश के कारण मजबूत विकास संभावनाओं का अनुमान लगाया है।
- **प्रमुख सुधार:** 2014 से अब तक किए गए प्रमुख सुधारों में शामिल हैं:
    - **वस्तु एवं सेवा कर(GST):** 2017 में लागू जीएसटी ने भारत के कर ढांचे को एकीकृत किया, अनुपालन को सरल बनाया और 2023-24 में कर संग्रह को बढ़ाकर 20.18 लाख करोड़ रुपये कर दिया।
    - **मेक इन इंडिया पहल:** भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र में बदलने के उद्देश्य से, इसने महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) आकर्षित किया है, जो 2013-14 में 24 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2023-24 में 44 बिलियन डॉलर हो गया है।
    - **प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY):** 2014 में शुरू की गई इस पहल से 53 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले गए हैं, जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला है।

तथ्य

- **सरकार ने सफलतापूर्वक बहुआयामी गरीबी को 2013-14 में 29.2% से घटाकर 2022-23 में 11.3% कर दिया है, जिससे लगभग 250 मिलियन लोग गरीबी से बाहर आ गए हैं।**
- स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा और परिवहन को लक्ष्य करते हुए सामाजिक क्षेत्र की योजनाओं पर वार्षिक खर्च लगभग ₹48 लाख करोड़ है।

चुनौतियाँ जो कायम हैं

- **भौगोलिक असमानताएँ:** उच्च आय वाले राज्यों (गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु) और निम्न आय वाले राज्यों (बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, असम) के बीच एक स्पष्ट विभाजन मौजूद है।
    - उच्च आय वाले राज्यों की प्रति व्यक्ति आय निम्न आय वाले राज्यों की तुलना में 2.2 गुना अधिक है।
- **आर्थिक संकेतक**:
    - भारत के 26% कार्यबल को आवास देने के बावजूद कम आय वाले राज्य सकल घरेलू उत्पाद में केवल 11% का योगदान देते हैं।
    - इन राज्यों में मातृ मृत्यु दर काफी अधिक है (राष्ट्रीय औसत 75 की तुलना में 165)।
    - गरीबी दर 23% है, जो राष्ट्रीय औसत 10% से दोगुने से भी अधिक है।
- **आकांक्षी जिले:** मुख्य रूप से अविकसित राज्यों में स्थित 112 आकांक्षी जिलों की स्थिति बहुत खराब है।
    - इन जिलों का मानव विकास सूचकांक स्कोर कुछ सबसे कमजोर उप-सहारा देशों के बराबर है।
    - **सामना की गई चुनौतियों के उदाहरण:** असम में, मानसून की बाढ़ के कारण "चार" नामक क्षेत्र अलग-थलग पड़ जाते हैं, जिससे शिक्षा और सेवाओं तक पहुंच बाधित हो जाती है।
        - बहराइच जिले में बच्चों को स्कूल जाते समय खतरनाक वन्यजीवों का सामना करना पड़ता है।

    - नागालैंड के किफिरे जिले में निवासियों को चिकित्सा देखभाल के लिए कठिन इलाकों से होकर लंबी दूरी तय करनी पड़ती है।
- **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) असमानताएं: CSR** वित्तपोषण में महत्वपूर्ण असमानता है:
    - पुणे को प्रतिवर्ष ₹257 करोड़ (प्रति व्यक्ति ₹375) प्राप्त होते हैं।
    - आकांक्षी जिलों को 25 करोड़ की आबादी के लिए केवल 472 करोड़ रुपये मिलते हैं, जो प्रति व्यक्ति मात्र 19 रुपये बैठता है।

समावेशी विकास के लिए तीन-खंड दृष्टिकोण

- **भारत की जनसंख्या को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है:**
    - **संपन्न वर्ग**: 5.6 करोड़ लोग।
    - **मध्यम आय और आकांक्षी वर्ग**: 110 करोड़ लोग।
    - **आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग**: 20 करोड़ लोग।
- **समतामूलक विकास के लिए समाधान**:
    - सबसे गरीब जिलों को लक्षित करने वाली **CSR** पहलों में निजी क्षेत्र की अधिक भागीदारी।
    - बेहतर सार्वजनिक सेवा वितरण सुनिश्चित करने के लिए मध्य-स्तरीय प्रणालियों में सरकारी सुधार।

स्रोत: **Indian Express: India Inc. Equity Challenge**

वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट(Annual Status of Education Report-ASER) 2024

संदर्भ

हाल ही में वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट 2024 जारी की गई।

समाचार के बारें में और अधिक जानकारी

- रिपोर्ट में विशेष रूप से सरकारी स्कूलों में सीखने के परिणामों में महत्वपूर्ण सुधारों पर प्रकाश डाला गया है, और इस प्रगति का श्रेय नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 को दिया गया है।

ASER 2024 के मुख्य निष्कर्ष

- **सीखने की हानि में समग्र सुधार:** ग्रामीण स्कूली बच्चों ने कोविड-19 के दौरान स्कूल बंद होने से हुई सीखने की हानि से काफी हद तक उबर लिया है।
    - हालाँकि, यह सुधार असमान है, तथा विषयों, स्कूल के प्रकार (सरकारी बनाम निजी) और राज्यों के आधार पर इसमें भिन्नताएं हैं।
- **पढ़ने की क्षमता: असमान सुधार:** सरकारी स्कूल के छात्र पूरी तरह से महामारी-पूर्व के पढ़ने के स्तर पर पहुंच गए हैं।
    - कुछ सुधार के बावजूद निजी स्कूल के छात्रों की स्थिति पूरी तरह से ठीक नहीं हुई है।
    - **मुख्य आँकड़े (कक्षा 5 के विद्यार्थी अपनी क्षेत्रीय भाषा में कक्षा 2 के स्तर का अनुच्छेद पढ़ रहे हैं):**
        - **सरकारी स्कूल:**
            - **2018:** 44.2%
            - **2022:** 38.5% (महामारी का निम्नतम स्तर)
            - **2024:** 44.8% (**6.3-अंक की रिकवरी**)
        - **निजी स्कूल:**
            - **2018:** 65.1%
            - **2022:** 56.8%
            - **2024:** 59.3% (**केवल 2.5 अंक की रिकवरी**)
- **अंकगणित कौशल: मजबूत रिकवरी**
    - सरकारी और निजी दोनों स्कूलों के छात्रों ने अपनी पूर्व-महामारी अंकगणितीय प्रवीणता के स्तर को पार कर लिया है।
    - सरकारी स्कूल के छात्रों ने निजी स्कूल के छात्रों की तुलना में बेहतर सुधार दिखाया।
    - **मुख्य सांख्यिकी (कक्षा 5 के विद्यार्थी तीन अंकों की संख्याओं को विभाजित करने में सक्षम):**
        - **सरकारी स्कूल:**
            - **2018:** 22.7%
            - **2022:** 21.6%
            - **2024:** 26.5% (**4.9-अंक की रिकवरी**)
        - **निजी स्कूल:**
            - **2018:** 39.8%
            - **2022:** 38.7%
            - **2024:** 41.8% (**3.1-अंक की रिकवरी**)
- **राज्य-स्तरीय भिन्नताएँ:** सभी राज्यों ने सुधार की **राष्ट्रीय प्रवृत्ति का अनुसरण नहीं किया।**
    - **पढ़ने की क्षमता:**

- **राष्ट्रीय प्रवृत्ति का अनुसरण करने वाले राज्य**: असम, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तराखंड, तमिलनाडु।
- **वे राज्य जो पूरी तरह से ठीक नहीं हुए**: **आंध्र प्रदेश और केरल** (सरकारी स्कूली बच्चों की पढ़ने की क्षमता ठीक नहीं हुई)।
  - **बिहार** (निजी स्कूल के बच्चों की पढ़ने की क्षमता में सुधार नहीं हुआ)।
  - **छत्तीसगढ़** (सरकारी और निजी दोनों स्कूलों में कोई सुधार नहीं)

- **अंकगणितीय क्षमता:**
  - **राष्ट्रीय प्रवृत्ति का अनुसरण करने वाले राज्य**: **कर्नाटक, मध्य प्रदेश।**
  - **अंकगणित कौशल में गिरावट वाले राज्य**: **केरल** (2024 में सरकारी और निजी दोनों स्कूलों में गिरावट)।

ASER 2024 में उजागर की गई चुनौतियाँ

- **शिक्षक प्रशिक्षण: प्रगति लेकिन अभी भी कार्य प्रगति पर**
  - कई शिक्षक अधिक सहानुभूतिपूर्ण हो गए हैं और छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से संबोधित कर रहे हैं।
  - हालाँकि, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम अभी भी शिक्षकों को कक्षा-विशिष्ट चुनौतियों से निपटने में मदद करने के लिए पूरी तरह से पर्याप्त नहीं हैं।
  - शिक्षकों को प्रशिक्षण के बाद सीमित सहायता उपलब्ध है।
  - सार्वभौमिक एफ.एल.एन. सुनिश्चित करने पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय, शिक्षण विधियों पर निर्णय अभी भी पाठ्यक्रम-आधारित हैं।

नीति निर्माताओं के लिए ध्यान केन्द्रित करने हेतु प्रमुख क्षेत्र

- पाठ्यक्रम पूरा होने के बाद प्रभावी कक्षा शिक्षण सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण के बाद शिक्षक समर्थन को मजबूत करें।
- विशेष रूप से केरल, आंध्र प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़ में पढ़ने और अंकगणित पुनर्प्राप्ति में राज्य-स्तरीय असमानताओं को संबोधित करें।
- लचीली शिक्षाशास्त्र को सुनिश्चित करें जो सभी के लिए एक-आकार-फिट दृष्टिकोण के बजाय विभिन्न सीखने के स्तरों के अनुकूल हो।
- दीर्घकालिक शिक्षण सुधार सुनिश्चित करने के लिए एफएलएन पहल पर गति बनाए रखें।

स्रोत: **The Hindu: Govt. schoolchildren lead recovery in basic skills; private ones lag**
Indian Express: Classroom Success